Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) _____

   (Name) _____

2. (Signature) _____

   (Name) _____

Roll No. | | | | | | | |
(In figures as per admission card)

Roll No. _____
(In words)

Test Booklet No.

D–7308

PAPER–III
SANSKRIT TRADITIONAL SUBJECT

Time : 2½ hours] **[Maximum Marks : 200**

Number of Pages in this Booklet : **40** Number of Questions in this Booklet : **26**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answers to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Test Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the question booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your name or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the Test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc. is prohibited.**
10. **There is NO negative marking.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुये रिक्त स्थान पर ही लिखिये।

   इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी। पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी सील को फाड़ लें। खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें।
   (ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं। दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ / प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें। इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे। उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा।**
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें।
8. **केवल नीले / काले बाल प्वाईंट पैन का ही इस्तेमाल करें।**
9. **किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है।**
10. **गलत उत्तर के लिए अंक नहीं काटे जायेंगे।**

संस्कृत-परम्परागत-विषयः

SANSKRIT TRADITIONAL SUBJECT

प्रश्नपत्रम्—III

प्रश्न-पत्र—III

PAPER—III

टिप्पणी : अस्य प्रश्नपत्रस्य शतद्वयम् (200) अङ्काः सन्ति एवम् अस्मिन् चत्वारि (4) खण्डानि सन्ति। अभ्यर्थिभिः एषु समाहितानां प्रश्नानामुत्तरं पृथग्विहितविस्तृत निर्देशानुसारं देयम्।

नोट : यह प्रश्नपत्र दो सौ (200) अंकों का है एवं इसमें चार (4) खंड है। अभ्यर्थियों को इन में समाहित प्रश्नों का उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है।

NOTE: **This paper is of two hundred (200) marks containing four (4) sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.**

खण्डम् – I
खण्ड – I
SECTION - I

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे निम्नाङ्कितानुच्छेदानाश्रित्य पञ्च **(5)** प्रश्नाः सन्ति। प्रत्येकम्प्रश्नः प्रायः त्रिंशत् **(30)** शब्दैः समपेक्ष्यते। प्रत्येकम्प्रश्नः **(5)** पञ्चाङ्कोऽस्ति। **(5x5=25 अंङ्काः)**

नोट : इस खंड में निम्नलिखित अनुच्छेद पर आधारित पाँच **(5)** प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्नका उत्तर लगभग तीस **(30)** शब्दों में अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पाँच **(5)** अंकों का है। **(5x5=25 अंक)**

Note : This section contains five **(5)** questions based on the following paragraph. Each question should be answered in about thirty **(30)** words and each carries five **(5)** marks. **(5x5=25 marks)**

अस्ति मगधदेशे चम्पकवती नामारण्यानी। तस्यां चिरान्महता स्नेहेन मृगकाकौ निवसतः। स च मृगः स्वेच्छया भ्राम्यन् हृष्टपुष्टाङ्गः केनचिच्छृगालेनावलोकितः। तं दृष्ट्वा श्रृगालोऽचिन्तयत् – 'आः कथमेतन्मांसं सुललितं भक्षयामि? भवतु, विश्वासं तावदुत्पादयामि।' इत्यालोच्य उपसृत्याब्रवीत् – 'मित्र। कुशलं ते?'। मृगेणोक्तम् – 'कस्त्वम्?'। स ब्रूते – 'क्षुद्रबुद्धिनामा जम्बूकोऽहम्। अत्रारण्ये बन्धुहीनो मृतवन्निवसामि। इदानीं त्वां मित्रमासाद्य पुनः सबन्धुर्जीवलोकं प्रविष्टोऽस्मि। अधुना तवानुचरेण मया सर्वथा भवितव्यम्'। मृगेणोक्तम् – 'एवमस्तु'। ततः पश्चादस्तंगते सवितरि भगवति मरीचिमालिनि तौ मृगस्य वासभूमिं गतौ। तत्र चम्पकवृक्षशाखायां सुबुद्धिनामा काको मृगस्य चिरमित्रं निवसति। तौ दृष्ट्वा काकोऽवदत् – 'सखे चित्राङ्ग! कोऽयं द्वितीयः?' मृगो ब्रूते – 'जम्बूकोऽयम्। अस्मत्सख्यमिच्छन्नागतः' काको ब्रूते – मित्र! अकस्मादागन्तुना सह मैत्री न युक्ता।

1. मृगकाकौ कुत्र निवसतः?

2. मृगं दृष्ट्वा श्रृगालः किमचिन्तयत्?

3. क्षुद्रबुद्धेः परिचयं कुरूत।

4. क्षुद्रबुद्धिना कृतं विश्वाससम्पादनप्रकारं विशदयत।

5. सुबुद्धिः कः? तस्य उपदेश सारांशं किम्?

खण्डम् – II

खण्ड – II

SECTION - II

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे **(5)** पञ्चाङ्कात्मकाः पञ्चदश **(15)** प्रश्नाः सन्ति। प्रत्येकं प्रश्नस्य उत्तरं प्रायः त्रिंशत् **(30)** शब्दैरपेक्ष्यते।

(5x15=75 अंङ्काः)

नोट : इस खंड में पाँच-पाँच **(5-5)** अंकों के पंद्रह **(15)** प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग तीस **(30)** शब्दों में अपेक्षित है।

(5x15=75 अंक)

Note : This section contains fifteen **(15)** questions each to be answered in about thirty **(30)** words. Each question carries five **(5)** marks.

(5x15=75 marks)

6. विविधेषु संस्कारेषु गुरुशुक्रयोः अस्तफलम् वर्णयत।

विविध संस्कारों गुरु और शुक्र के अस्त होने का फल लिखिए।

Describe the effects of अस्त position of गुरु and शुक्र in various संस्कारs.

7. ग्रहाणाम् कक्षा विषये सिद्धान्त ज्योतिष शास्त्रस्य विधानं लिखत।

ग्रहों की कक्षा के विषय में सिद्धान्त ज्योतिष शास्त्र के विधानों को लिखें।

Bring out the system of सिद्धान्त ज्योतिष regarding ग्रह कक्षा.

8. 'सुद्ध्युपास्यः' इत्यत्र अच् सन्धिं सप्रमाणं विवृणुत।

सुद्ध्युपास्यः इस उदाहरण में अच् सन्धि को प्रमाण सहित स्पष्ट कीजिए।

Explain with the relevant rules in अच् सन्धि in सुद्ध्युपास्यः.

9. 'नीलोत्पल'मिति पदं विगृह्य समासकार्यं विशदयत।

'नीलोत्पलं' इस पद पर होनेवाले समासकार्य को स्पष्ट कीजिए।

Analyse the compound नीलोत्पलं and explain the grammatical process.

10. धर्मशास्त्रमनुसृत्य धर्मलक्षणं प्रतिपादयत –

धर्मशास्त्र के अनुसार धर्म का लक्षण प्रतिपादन कीजिए –

Discuss the definition of धर्म according to धर्मशास्त्र.

11. पूर्वमीमांसा सम्मतं शाब्दीभावनालक्षणं लिखत –
पूर्वमीमांसा के अनुसार शाब्दीभावना का लक्षण लिखिए –
Explain the शाब्दीभावनालक्षण according to पूर्वमीमांसा.

12. पृथिवीं लक्षणभेदाभ्यां निरूपयत।
पृथिवी का लक्षण और उस का भेदों का निरूपण कीजिए।
Define and illustrate with varieties the पृथिवी.

13. त्रिविधदु:खस्वरूपं विशदयत।

त्रिविधदु:ख का स्वरूप का वर्णन कीजिए।

Explain the nature of त्रिविधदु:ख.

14. पुराणगतं भुवनकोशं वर्णयत।

पुराणों में प्राप्त भुवनकोश का वर्णन कीजिए।

Describe भुवनकोश according to पुराणs.

15. ऋग्वेदस्य महत्त्वं वर्णयत।

ऋग्वेद के महत्व का वर्णन कीजिए।

Describe the importance of ऋग्वेद.

16. यजुर्वेदस्य ब्राह्मणानि विलिख्य कस्यचिदेकस्य वैशिष्ट्यं प्रतिपादयत।

यजुर्वेद के ब्राह्मणों का नाम लिखकर किसी एक की विशेषताएँ बताइए।

Mentioning the ब्राह्मणs of यजुर्वेद state the characteristics of any one of them.

17. अलङ्कारस्य स्वरूपं तद्भेदांश्च निरूपयत।

अलङ्कार के स्वरूप तथा उनके भेदों का निरूपण कीजिए।

Explain the nature and kinds of अलङ्कार.

18. 'शान्तोऽपि नवमो रसः' – व्याख्या कुरूत।

'शान्तोऽपि नवमो रसः' – व्याख्यान कीजिए।

'शान्तोऽपि नवमो रसः' - Explain.

19. न्यायजैनमतयोः जीवात्मस्वरूपं विचारयत।

न्यायदर्शन और जैन दर्शनों में जीवात्मस्वरूप का विचार कीजिए।

Discuss the nature of जीवात्म in न्याय and जैन systems.

20. अद्वैतवेदान्तानुसारं अनुबन्धचतुष्टयं विवृणुत।

अद्वैतवेदान्त के अनुसार अनुबन्धचतुष्टय का वर्णन कीजिए।

Explain अनुबन्धचतुष्टय according to अद्वैतवेदान्त.

खण्डम् – III
खण्ड – III
SECTION - III

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे प्रत्येकम् ऐच्छिकेवर्गः/विशेषज्ञतानुसारं पञ्च (5) प्रश्नाः सन्ति। अभ्यर्थिना केवलमेकमेवैच्छिक वर्गं/विशेषज्ञताम् आश्रित्य तस्मादेव प्रञ्च प्रश्नाः समाधेयाः। प्रत्येकं प्रश्नः (12) द्वादशाङ्कात्मकोऽस्ति, एवं तदुत्तरं प्रायः शतद्वय (200) शब्दैःअपेक्ष्यते।

(12x5=60 अंङ्काः)

नोट : इस खंड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता से पाँच (5) प्रश्न हैं। अभ्यर्थी को केवल एक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता को चुनकर उसी में से पाँचो प्रश्नों का उत्तर देना है। प्रत्येक प्रश्न बारह (12) अंकों का है व उसका उत्तर लगभग दो सौ (200) शब्दों में अपेक्षित है।

(12x5=60 अंक)

Note : This section contains five (5) questions from each of the electives / specialisations. The candidate has to choose only one elective / specialisation and answer all the five questions from it. Each question carries twelve (12) marks and is to be answered in about two hundred (200) words.

(12x5=60 marks)

फलितज्योंतिषम्

21. द्वादशभावानाम् नामानि विलिख्य सप्तमभावस्य विवेचनम् कुरुत।
द्वादश भावों का नाम लिखकर सप्तम भाव का विवेचन कीजिए।
Write the name of द्वादशभावाs and explain सप्तमभाव.

22. भौमदोषकारकाणाम् भावानां विवेचनं कुरुत।
भौमदोष कारक भावों का विवेचन कीजिए।
Explain the भौमदोषकारकभावाs.

23. विषयोगस्य शमनोपायं सूचयत।
विषयोग के शमनोपाय बताइए।
Tell the शमनोपाय of विषयोग.

24. कालसर्प योगस्य विवेचनं कुरुत।
कालसर्पयोग का विवेचन करें।
Explain the कालसर्पयोग.

25. गुरुदशा फलं लिखत।
गुरुदशा फल लिखें।
Write the दशाफल of Guru.

सिद्धान्तज्यौतिषम्

21. नक्षत्राणाम् परिचयं लिखत।
नक्षत्रों का परिचय दीजिए।
Write a note of नक्षत्रs.

22. चन्द्रग्रहणस्य सामान्य परिचयो देय:।
चन्द्रग्रहण का सामान्य परिचय दीजिए।
Bring-out general systems of चन्द्रग्रहण.

23. सिद्धान्तज्योतिषस्य महत्त्वं प्रतिपादयत।
सिद्धान्त ज्योतिष के महत्त्व का प्रतिपादन कीजिए।
What is importance of सिद्धान्तज्योतिष ? Explain.

24. विवाहमेलापकविषयं विवेचयत।
विवाहमेलापक विषय का विवेचन कीजिए।
Discuss the subject of विवाहमेलापक.

25. पञ्चांगस्य निर्माणं कथं क्रियते? इति विशदयत।
पञ्चांग निर्माण कैसे किया जाता है? स्पष्ट कीजिए।
What are the rules of पञ्चांग निर्माण ? Explain.

व्याकरणम्

21. व्याकरणाध्ययनस्य मुख्यप्रयोजनानि विशदयत।
व्याकरण - अध्ययन के मुख्य प्रयोजन बताइए।
Explain the major purposes of व्याकरणाध्ययन.

22. स्फोटस्वीकारे हेतून् प्रदर्श्य वाक्यस्फोटस्य प्राधान्यं व्यवस्थापयत।
स्फोट् स्वीकार ने हेतु बताकर वाक्यस्फोट की प्रधानत अभिव्यक्त कीजिए।
Give reasons for the acceptance of स्फोट and establish the importance of वाक्यस्फोट.

23. व्याकरणदर्शनानुसारेण शब्दब्रह्म विशदयत।
व्याकरणदर्शन के अनुसार शब्दब्रह्म को स्पष्ट कीजिए।
Describe शब्दब्रह्म according to व्याकरणदर्शन.

24. अन्यमतनिरासपूर्वकं वैयाकरणाभिमतं धात्वर्थं वर्णयत।
परमतखण्डन करते हुए वैयाकरणसंगत धात्वर्थ का वर्णन कीजिए।
Establish the धात्वर्थ as accepted by the वैयाकरणाs refuting the views of others.

25. कृत्यप्रत्ययान् ससूत्रं सोदाहरणं च वर्णयत।
सूत्र एवं उदाहरण देते हुए कृत्यप्रत्ययों का वर्णन कीजिए।
Describe कृत्यप्रत्ययs with सूत्रs and examples.

मीमांसा

21. वेदः पौरुषेयोऽपौरुषेयो वा इति विवेचयत।
वेद पौरुषेय – अथवा अपौरुषेय यह विचार करें।
Is the veda पौरुषेय or अपौरुषेय ? Discuss.

22. विधिस्वरूपं तद्भेदांश्च प्रतिपादयत।
विधिस्वरूप तथा उसके भेद को प्रतिपादन करें।
Explain the nature of विधि and its kinds.

23. सोमयागभेदान् प्रतिपादयत।
सोमयाग का भेद प्रतिपादन करें।
Point out the kinds of सोमयाग.

24. अर्थवादभेदान् निरूपयत।
अर्थवाद के भेद निरूपण करें।
State how many अर्थवादs are there.

25. श्रौतयाग – स्मार्त्तयागयोः स्वरूपं प्रतिपादयत।
श्रौतयाग – स्मार्त्तयाग के स्वरूप प्रतिपादन करें।
Bringout the characteristics of श्रौतयाग and स्मार्त्तयाग.

नव्यन्यायः

21. लक्षणायाः लक्षणं प्रदर्शनीयम्।
लक्षणा का लक्षण लिखिए।
Point out the definition of लक्षण.

22. सुवर्णस्य तैजसत्वं साधनीयम्।
सुवर्ण का तैजसत्त्व सिद्ध कीजिए।
Establish तैजसत्त्व of सुवर्ण.

23. प्रत्यक्षप्रमाणस्य प्रक्रिया प्रकाशनीया।
प्रत्यक्षप्रमाण की प्रक्रिया का निरूपण कीजिए।
Bring out the process of the operation of प्रत्यक्षप्रमाण.

24. हेत्वाभासान् सोदाहरणं विशदयत।
उदाहरण सहित हेत्वाभासों का विवेचन कीजिए।
Explain with illustration the हेत्वाभासs.

25. अभावस्य पदार्थत्वं साधयत।
आभाव की पादर्थता सिद्ध कीजिए।
Establish the पदार्थत्व of आभाव.

सांख्ययोगौ

21. सांख्यमते प्रधानस्य प्राधान्यं प्रस्तावयत।
सांख्यदर्शन के अनुसार प्रकृति के प्राधान्यता वर्णन कीजिए।
Bring out the significance of प्रधान in सांख्य system.

22. सांख्यमतमनुसृत्य पुरुषबहुत्वं साधयत।
सांख्य के अनुसार पुरुषबहुत्व सिद्ध कीजिए।
Establish पुरुषबहुत्व following सांख्य system.

23. 'प्रकृतिर्वियोगो मोक्षः' – कथमिति निरूपयत।
'प्रकृतिर्वियोगो मोक्षः' – यह कि है? इस का निरूपण कीजिए।
'प्रकृतिर्वियोगो मोक्षः' - Explain how is it possible.

24. योगमतानुसारं पञ्चक्लेशानां स्वरूपं विशदयत।
योगदर्शन के अनुसार पञ्चक्लेशों का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
Explain the nature of पञ्चक्लेशाs of योगमत.

25. 'ईश्वर प्रणिधानाद्वा' – इत्यमुं सूत्रं व्याख्यात।
'ईश्वर प्रणिधानाद्वा' – इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
Explain the aphorism, 'ईश्वर प्रणिधानाद्वा'.

तुलनात्मकदर्शनम्

21. जैनबौद्धदर्शनयोः जीवनस्वरूपं विशदयत।
जैनदर्शन और बौद्धदर्शन में जीव का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
Explain the nature of जीव in जैन and बौद्धदर्शनs.

22. मोक्षस्यस्वरूप विषये सांख्ययोगयोः तारतम्यं निरूपयत।
मोक्ष के स्वरूप के विषय में सांख्य और योगदर्शनों का तारतम्य निरूपित कीजिए।
State the difference between सांख्य and योग with respect of the nature of मोक्ष.

23. आत्मख्याति – असत्ख्यातिवादिनोः तारतम्यं विचारयत।
आत्मख्यातिवादि और असत्ख्यातिवादिनों में तारतम्य बताइए।
Discuss तारतम्य between the advocators of आत्मख्याति and असत्ख्याति.

24. चार्वाकजैनदर्शनयोः सिद्धान्तान् तुलनात्मकतया परिशीलयत।
चार्वाकदर्शन और जैनदर्शन के सिद्धान्तों का तुलनात्मक दृष्टि से परिशीलन कीजिए।
Examine comparatively the doctrines of चार्वाक and जैन.

25. एकान्तवादात् स्याद्वादस्य वैलक्षण्यं प्रदर्शयत।
एकान्तवाद से स्याद्वाद की विलक्षणना प्रदर्शन कीजिए।
Point out the distinctness of स्याद्वाद with that of एकान्तवाद.

शुक्लयजुर्वेदः

21. शुक्लयजुर्वेदीयब्राह्मणस्य प्रतिपाद्यविषयं लिखत।
शुक्लयजुर्वेदीयब्राह्मण का प्रतिपाद्य विषय लिखिए।
Write subject matter of शुक्लयजुर्वेदीयब्राह्मण.

22. बृहदारण्यकोपनिषदः वैशिष्ट्यं प्रतिपादयत।
बृहदारण्यकोपनिषद् के वैशिष्ट्य का प्रतिपादन कीजिए।
Describe the characteristics of बृहदारण्यकोपनिषद्.

23. पारस्करग्टह्यसूत्रस्य वैशिष्ट्यं वर्णयत।
पारस्करग्टह्यसूत्र के वैशिष्ट्य का वर्णन कीजिए।
Point out the characteristics of पारस्करग्टह्यसूत्र.

24. शुक्लयजुर्वेदे प्रतिपादितं राजनीतिकं जीवनं विशदयत।
शुक्लयजुर्वेद में प्रतिपादित राजनीतिक जीवन स्पष्ट कीजिए।
Describe the political life as found in शुक्लयजुर्वेद.

25. निरुक्तस्य वैशिष्ट्यं प्रदर्शयन् वेदाङ्गेषु तस्य स्थानं प्रतिपादयत।
निरुक्त की विशेषता बताते हुए वेदाङ्गों में उसका स्थान निर्धारित कीजिए।
Describing the characteristics of निरुक्त indicate its place in वेदाङ्गs.

मध्ववेदान्तः

21. मध्ववेदान्तदृष्टया स्वतःप्रमाण्यवादं निराकुरुत।
मध्ववेदान्त की दृष्टि से स्वतःप्रामाण्यवाद का निराकरण कीजिए।
Refute स्वतःप्रामाण्यवाद according to मध्ववेदान्त.

22. अनिर्वचनीयख्यातिं मध्वदिशा प्रतिपादयत।
मध्ववेदान्त की दृष्टि से अनिर्वचनीयख्याति का प्रतिपादन कीजिए।
Describe अनिर्वचनीयख्याति; according to मध्व.

23. अनुप्रमाणभेदान् प्रदर्शयन् मानान्तराणां तत्रान्तर्भावं निर्दिशत।
अनुप्रमाण के भेद बताते हुए अन्यप्रमाणों का उसमें अन्तर्भाव दिखाइए।
Define the different type of अनुप्रमाण and show the inclusion of other प्रमाणs in them.

24. जीवब्रह्मणोर्भेदं मध्वदिशा प्रतिपादयत।
मध्ववेदान्त की दृष्टि से जीव और ब्रह्मण के भेद प्रतिपादन कीजिए।
Describe the difference between जीव and ब्रह्म according to मध्व.

25. 'तत्त्वमसि' इति महावाक्यं द्वैतदिशा वर्णयत।
'तत्त्वमसि' इस महावाक्य के अर्थ को द्वैतवेदान्त की दृष्टि से समझाइए।
Explain the meaning of the word 'तत्त्वमसि' according to द्वैत.

धर्मशास्त्रम्

21. धर्मशास्त्रोक्तदिशा धर्मस्य स्त्रोतांसि विवेचनीयानि।
धर्मशास्त्र के अनुसार धर्म के स्त्रोतों का विवेचन कीजिए।
Examine the sources of धर्म in the light of धर्मशास्त्र.

22. दायशब्दस्य विभागशब्दस्य चार्थं यथाशास्त्रं प्रतिपादयत।
दाय शब्द और विभाग शब्द के अर्थ यथाशास्त्र प्रतिपादन कीजिए।
Point out the meaning of दाय and विभाग according to धर्मशास्त्र.

23. स्त्रीधर्मान् यथाशास्त्रं निरूपयत।
धर्मशास्त्रानुसार स्त्री-धर्म का निरूपण कीजिए।
Explain the स्त्री-धर्म according to धर्मशास्त्र.

24. ब्राह्मणादिवर्णानामाशौचनिर्णयं कुरूत।
ब्राह्मणादि वर्णो का अशौच निर्णय कीजिए।
Write about अशौचनिर्णय of ब्राह्मणादिवर्णs.

25. आश्रमधर्मान् निरूपयत।
आश्रमधर्म का निरूपण कीजिए।
Discuss आश्रमधर्मs.

साहित्यम्

21. काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिवृत्तये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।।
– कारिकेयं व्याख्यायताम्।
– इस कारिका की व्याख्या कीजिए
Explain this verse.

22. 'तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्' इति मम्मटोक्तदिशा विवेचयत।
मम्मट के अनुसार 'तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्' – इस वाक्य का विवेचन कीजिए।
Explain the statement 'तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित्' according to मम्मट.

23. अन्विताभिधानवादस्वरूपं प्रतिपादयत।
अन्विताभिधानवाद के स्वरूप का प्रतिपादन कीजिए।
Give an account of अन्विताभिधानवाद.

24. काव्यस्यात्माध्वनिरिति साधयत।
काव्य की आत्मा ध्वनि है, इसे सिद्ध कीजिए।
Establish the view that ध्वनि is the soul of काव्य.

25. अभिधास्वरूपं सविस्तरं निरूप्यताम्।
अभिधा के स्वरूप का विस्तृत रूप से निरूपण कीजिए।
Discuss in details the nature of अभिधा.

पुराणेतिहासौ

21. पुराणस्वरूपं प्रदर्शयन् तस्य महत्त्वं लिखत।
पुराण का स्वरूप बताते हुए उसका महत्त्व लिखिए।
Mentioning the nature of पुराण, bring out its importance.

22. पुराणानुसारं नारायणस्वरूपं विशदयत।
पुराणों के अनुसार नारायण का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
Explain the nature of नारायण according to पुराणs.

23. विदुरनीतेः उपयोगितां वर्णयत।
विदुरनीति की उपयोगिता का वर्णन कीजिए।
Describe the utility of विदुरनीति.

24. पुराणप्रोक्तं दशावतारविषयं विवेचयत।
पुराणोक्त दशावतार विषय का विवेचन कीजिए।
Discuss the subject दशावतार as found in पुराणs.

25. श्रीमद्भागवतपुराणानुसारं श्रीकृष्णमाहात्म्यं प्रतिपादयत।
श्रीमद्भागवतपुराण के अनुसार श्रीकृष्णमाहात्म्य का प्रतिपादन कीजिए।
Describe श्रीकृष्णमाहात्म्य according to श्रीमद्भागवतपुराण.

आगमः

21. आगमसाहित्यस्य सामान्यपरिचयं प्रदत्त।
आगमसाहित्य का सामान्य परिचय कीजिए।
Give an account of general characteristics of आगमसाहित्य.

22. तन्त्रावतारपटलानां विषयं तथा प्रयोजनं च प्रस्तावयत।
तन्त्रावतारपटलों का विषय और प्रयोजन का प्रस्ताव कीजिए।
State the contents as well as the purpose of तन्त्रावतारपटलs.

23. वैष्णवागमाननुसृत्य पञ्चव्यूहानां स्वरूपं विशदयत।
वैष्णव आगमों का अनुसार पञ्चव्यूहों का स्वरूप वर्णन कीजिए।
Elucidate the characteristics of पञ्चव्यूहs as propounded in वैष्णवागमs.

24. आगमान्तर्गतचर्यापादानां वैशिष्टयं विवृणुत।
आगमों के अन्तर्गत चर्यापादों के विषयप्रस्ताव कीजिए।
Elucidate the significance of चर्यापादs found in the आगमs.

25. आगमाभिमतं मोक्षस्वरूपं निरूपयत।
आगमों को अभीष्ट मोक्षस्वरूप का निरूपण कीजिए।
Bringout the nature of मोक्ष acceptable to आगमs.

अद्वैतवेदान्तः

21. अद्वैतवेदान्तानुसारं ब्रह्मणः स्वरूपं वर्णयत।
अद्वैतवेदान्त के अनुसार ब्रह्म के स्वरूप वर्णन कीजिए।
Describe the nature of ब्रह्म according to अद्वैतवेदान्त.

22. मायायाः स्वरूपमुपवर्ण्य तस्याः शक्तिद्वयं उपपादयत।
माया का स्वरूप बताते हुए उस की दो शक्तियों का प्रतिपादन कीजिए।
Describe the nature of माया and illustrate its two powers.

23. अचेतनस्य प्रधानस्य जगत्कारणत्वं निराकुरुत।
अचेतन प्रधान का जगत्कारणता का खण्डन कीजिए।
Refute the view that the non-sentient प्रधान is the cause of जगत.

24. 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' इति सूत्रं शाङ्करभाष्यानुसारं व्याख्यात।
'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' इस सूत्र शाङ्करभाष्य के अनुसार व्याख्या कीजिए।
Explain the सूत्र 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' according to शाङ्करभाष्य.

25. अद्वैतवेदान्तानुसारेण मुक्तिः कतिविधा? विशदयत।
अद्वैतवेदान्त के अनुसार मुक्ति कितने प्रकार की होती है? स्पष्ट कीजिए।
How many kinds of मुक्ति according to अद्वैतवेदान्त ? Explain.

खण्डम् – IV
खण्ड – IV
SECTION - IV

टिप्पणी : अस्मिन् खण्डे चत्वारिंशदङ्कात्मकः (40) निबन्धाश्रेणीकः एकः प्रश्नोऽस्ति, यस्योत्तरं निम्नविषयेवु अन्यतममाश्रित्य प्रायः सहस्रमितैः (1000) शब्दैरपेक्ष्यते।

(40x1=40 अङ्काः)

नोट : इस खंड में एक चालीस (40) अंकों का निबन्धात्मक प्रश्न है जिसका उत्तर निम्नलिखित विषयों में से केवल एक पर, लगभग एक हजार (1000) शब्दों में अपेक्षित है।

(40x1=40 अंक)

Note : This section consists of one essay type question of forty (40) marks to be answered in about one thousand (1000) words on any of the following topics.

(40x1=40 marks)

26. (क) काव्यस्यात्मा ध्वनिः

(ख) दर्शपौर्णमासेष्टिः

(ग) शाङ्करदर्शनम्

(घ) अष्टादशव्यवहारपदानि

(ङ) नक्षत्रमेलापकम्

(च) पुराणेषु नारायणस्वरूपम्

(छ) संस्कृतं भारतज्योतिः

(ज) गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः

FOR OFFICE USE ONLY							
Marks Obtained							
Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained
1		26		51		76	
2		27		52		77	
3		28		53		78	
4		29		54		79	
5		30		55		80	
6		31		56		81	
7		32		57		82	
8		33		58		83	
9		34		59		84	
10		35		60		85	
11		36		61		86	
12		37		62		87	
13		38		63		88	
14		39		64		89	
15		40		65		90	
16		41		66		91	
17		42		67		92	
18		43		68		93	
19		44		69		94	
20		45		70		95	
21		46		71		96	
22		47		72		97	
23		48		73		98	
24		49		74		99	
25		50		75		100	

Total Marks Obtained (in words) .....

(in figures) .....

Signature & Name of the Coordinator .....

(Evaluation) Date .....